

## पद २५४

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

मै तोरे हीन दीन कैसे छुटैयां । पापपुण्य कछु देखन आया ॥ध्रु.॥  
पावन किये पापी अजामिल । दुजा पावन किये चोखामेल ।  
पावन किये रोहिदास चम्हारिया ॥१॥ पावन किये मीराबाई । दुजा  
पावन किये सजन कसाई । पावन गजराज गुसैय्या ॥२॥ मानिक  
के प्रभु नाथ कृष्णजी । कर जोर करता है अर्जी । तुम्हारे चरनको  
ध्यास लगय्या ॥३॥